विद्या भवन बालिका विद्या पीठ

वर्ग:— पंचम दिनांक :— 11. 06.21

विषय :- सी.सी.ए विषय शिक्षक:- प्रज्ञा

एन सी ईआरटी पर आधारित।

सुप्रभात बच्चों ,आज हम कबीर के दोहे पढ़ेगें ।

कुमति कीच चेला भरा... , गुरु ज्ञान जल होय |
जनम जनम का मोर्चा... , पल में दारे धोय ||

एक शिष्य अज्ञानता के कीचड़ से भरा है। गुरु ज्ञान का जल है। जो भी अशुद्धियाँ कई जन्मों में जमा होती हैं, वह एक क्षण में साफ हो जाती है।

गुरु सामान दाता नहीं... , याचक सीश सामान |
तीन लोक की सम्पदा... , सो गुरु दीन्ही दान ||

गुरु के समान कोई दाता नहीं है और शिष्य के समान कोई साध नहीं है। गुरु शिष्य को तीनों लोकों का अनुदान देते हैं।

दोहे को समझकर याद करें।

लूट सके तो लूट ले, राम नाम की लूट।
पाछे फिर पछताओगे, प्राण जाही जब छूट ॥

अर्थ: – कबीर जी कहते है कि जब तक तुम जिन्दा हो, ईश्वर का नाम लो उसकी पूजा करो नहीं तो मरने के बाद तुम्हे पछताना पड़ेगा।

5.

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरी करेगा कब ॥

अर्थ: – समय का महत्व समझते हुए कबीर जी कहते है कि जो कार्य तुम कल के लिए छोड़ रहे हो उसे आज करो और जो कार्य आज के लिए छोड़ रहे हो उसे अभी करो, कुछ ही वक़्त में तुम्हारा जीवन ख़त्म हो जाएगा तो फिर तुम इतने सरे काम कब करोगे। अथार्त हमे किसी भी काम को तुरंत करना चाहिए उसे बाद के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।

6.

साईं इतना दीजिये, जा के कुटुम्ब समाए।
मैं भी भुखा न रहू, साधू ना भुखा जाय ॥

अर्थ: – संत कबीर जी कहते है कि हे ईश्वर मुझे इतना दो की मै अपने परिजनों का, अपने परिवार का गुजरा कर सकू। मैं भी भर पेट खाना खा सकू और आने वाले सज्जन को भी भर पेट खाना खिला सकू। अथार्त हमे बहुत अधिक धन की लालच नहीं करनी चाहिए, हमे इतने में ही संतोष कर लेने चाहिए जितने में हम अपने और अपने परिजनों को भर पेट खाना खिला सके।

****